IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)

बिहार शोध समागम
BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 3 July-September, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
https://doi.org/10.5281/zenodo.22962165

ISSN : 3048-6971

"पुर्तगाली औपनिवेशिक विरासत और समकालीन गोवा: पहचान, प्रवासन एवं विकास की बदलती राजनीति"

डॉ. रिंकी कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
जय प्रकाश महिला महाविध्यालय छपरा, बिहार

सारांश

गोवा भारतीय उपमहाद्वीप का एक ऐसा विशिष्ट क्षेत्र है जिसकी राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना पर औपनिवेशिक इतिहास का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। लगभग चार शताब्दियों तक पुर्तगाली शासन के अधीन रहने के कारण गोवा का ऐतिहासिक विकास भारत के अन्य क्षेत्रों से कुछ अलग रहा। वर्ष 1961 में पुर्तगाली शासन से मुक्ति और भारतीय संघ में विलय के बाद गोवा के सामने एक ओर भारतीय लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक व्यवस्था के साथ एकीकरण की चुनौती थी, तो दूसरी ओर अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक परंपराओं और औपनिवेशिक विरासत को बनाए रखने का प्रश्न भी था। इस दृष्टि से समकालीन गोवा केवल पर्यटन की दृष्टि से प्रसिद्ध राज्य नहीं है, बल्कि औपनिवेशिक विरासत, राष्ट्रीय एकीकरण, क्षेत्रीय पहचान, वैश्वीकरण, प्रवासन और विकास की राजनीति को समझने का महत्वपूर्ण अध्ययन-क्षेत्र है। यह शोध-पत्र पुर्तगाली औपनिवेशिक विरासत और समकालीन गोवा के बीच संबंधों का राजनीतिक एवं सामाजिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें यह समझने का प्रयास किया गया है कि पुर्तगाली शासन ने गोवा की प्रशासनिक संस्थाओं, धार्मिक-सांस्कृतिक जीवन, भाषा, वास्तुकला, खान-पान, शिक्षा और सामाजिक संरचना को किस प्रकार प्रभावित किया तथा स्वतंत्र भारत में गोवा के एकीकरण के बाद इन प्रभावों का पुनर्संयोजन किस प्रकार हुआ। साथ ही, गोवा की क्षेत्रीय अस्मिता के निर्माण में मुक्ति आंदोलन, कोंकणी भाषा, स्थानीय समुदायों, प्रवासी गोवावासियों और राज्य की राजनीति की भूमिका का विश्लेषण किया गया है।

लेख में पर्यटन-आधारित अर्थव्यवस्था और वैश्वीकरण के प्रभावों पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। पर्यटन ने गोवा को रोजगार, आय, आधारभूत संरचना और वैश्विक पहचान प्रदान की है, लेकिन इसके साथ भूमि पर दबाव, पर्यावरणीय संकट, सांस्कृतिक व्यावसायीकरण, स्थानीय संसाधनों के असमान उपयोग और जीवन-शैली में परिवर्तन जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। इसी प्रकार गोवा से विदेशों की ओर होने वाला प्रवासन केवल आर्थिक घटना नहीं है, बल्कि यह गोवानी समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना और पहचान को प्रभावित करने वाली प्रक्रिया है। विदेशों में बसे गोवावासी आर्थिक रूप से वैश्विक समाज का हिस्सा होते हुए भी परिवार, भाषा, धर्म, त्योहार, भोजन और सांस्कृतिक परंपराओं के माध्यम से गोवा से जुड़े रहते हैं। यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि समकालीन गोवा को केवल औपनिवेशिक अतीत अथवा पर्यटन-आधारित अर्थव्यवस्था के संदर्भ में नहीं समझा जा सकता। गोवा की वर्तमान पहचान औपनिवेशिक विरासत, भारतीय राष्ट्र-राज्य में एकीकरण, क्षेत्रीय अस्मिता, वैश्वीकरण, प्रवासन और विकास के बीच निरंतर अंतःक्रिया का परिणाम है। अतः गोवा के लिए ऐसी विकास नीति की आवश्यकता है जो आर्थिक प्रगति के साथ-साथ स्थानीय समुदायों, सांस्कृतिक विरासत, पर्यावरण और क्षेत्रीय पहचान के संरक्षण को भी समान महत्व दे।

प्रमुख शब्द: गोवा, पुर्तगाली औपनिवेशिक विरासत, औपनिवेशिकता, पहचान, क्षेत्रीय अस्मिता, प्रवासन, पर्यटन, वैश्वीकरण, विकास, संस्कृति, राजनीतिक परिवर्तन।

प्रस्तावना

भारत की राजनीतिक और सामाजिक विविधता को समझने के लिए विभिन्न क्षेत्रों के ऐतिहासिक अनुभवों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। भारत में ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जिनकी सामाजिक एवं राजनीतिक संरचना पर अलग-अलग औपनिवेशिक शक्तियों का प्रभाव पड़ा। गोवा इस संदर्भ में विशेष महत्व रखता है। भारतीय पश्चिमी तट पर स्थित गोवा का इतिहास पुर्तगाली शासन, स्थानीय समाज, समुद्री व्यापार, धार्मिक परिवर्तन, सांस्कृतिक संपर्क और बाद में भारतीय राष्ट्र-राज्य में एकीकरण की जटिल प्रक्रिया से निर्मित हुआ है। गोवा का आधुनिक इतिहास एक ओर औपनिवेशिक शासन के अनुभव से जुड़ा है, वहीं दूसरी ओर भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और गोवा मुक्ति आंदोलन से भी संबंधित है। 19 दिसंबर 1961 को पुर्तगाली शासन का अंत हुआ और गोवा भारतीय संघ का हिस्सा बना। इसके बाद गोवा ने राजनीतिक संस्थाओं, लोकतांत्रिक शासन और भारतीय संवैधानिक व्यवस्था के साथ स्वयं को जोड़ा। किंतु राजनीतिक एकीकरण का अर्थ सांस्कृतिक एकरूपता नहीं था। गोवा ने अपनी विशिष्ट क्षेत्रीय अस्मिता को बनाए रखते हुए भारतीय राष्ट्रवाद के साथ अपने संबंध को विकसित किया।

गोवा की पहचान को केवल धार्मिक या भाषायी आधार पर समझना पर्याप्त नहीं है। इसकी पहचान बहुस्तरीय है। इसमें कोंकणी भाषा, स्थानीय परंपराएँ, हिंदू और ईसाई समुदायों की सांस्कृतिक अंतःक्रिया, पुर्तगाली प्रभाव, समुद्री संस्कृति, पारिवारिक संबंध, संगीत, वास्तुकला, खान-पान और प्रवासी समुदायों की भूमिका सम्मिलित है। यही कारण है कि गोवा की पहचान को एक गतिशील राजनीतिक-सांस्कृतिक प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए। समकालीन समय में गोवा का सबसे प्रमुख आर्थिक आधार पर्यटन है। समुद्र तट, ऐतिहासिक चर्च, मंदिर, किले, वास्तुकला, संगीत, त्योहार और प्राकृतिक सौंदर्य गोवा को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। लेकिन पर्यटन के विस्तार ने विकास और संरक्षण के बीच तनाव भी पैदा किया है। भूमि उपयोग में परिवर्तन, शहरीकरण, पर्यावरणीय दबाव, कचरा, जल संसाधनों पर दबाव और स्थानीय समुदायों के विस्थापन जैसी समस्याएँ विकास की प्रक्रिया को जटिल बनाती हैं। दूसरी ओर, गोवा से विदेशों की ओर प्रवासन भी इसकी सामाजिक संरचना की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। अनेक गोवावासी रोजगार, शिक्षा और बेहतर आर्थिक अवसरों के लिए विदेशों में गए। किंतु विदेशों में रहने के बावजूद उनका गोवा से संबंध समाप्त नहीं हुआ। पारिवारिक संबंध, संपत्ति, त्योहार, धार्मिक संस्थाएँ, स्थानीय भाषा, भोजन और सांस्कृतिक गतिविधियाँ प्रवासी गोवावासियों को अपनी मातृभूमि से जोड़ती हैं। इस प्रकार गोवा की सामाजिक पहचान स्थानीय और वैश्विक दोनों आयामों को समाहित करती है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य इसी जटिल प्रक्रिया का राजनीतिक विश्लेषण करना है। इसमें यह समझने का प्रयास किया गया है कि औपनिवेशिक विरासत किस प्रकार वर्तमान राजनीतिक एवं सांस्कृतिक पहचान में उपस्थित है तथा पर्यटन, प्रवासन और वैश्वीकरण ने गोवा की सामाजिक संरचना को किस प्रकार पुनर्गठित किया है।

राजनीतिक विज्ञान के संदर्भ में अध्ययन का महत्व

गोवा का अध्ययन राजनीतिक विज्ञान के लिए कई कारणों से महत्वपूर्ण है।

- पहला, यह औपनिवेशिकता और उत्तर-औपनिवेशिकता के बीच संबंध को समझने का अवसर देता है।
- दूसरा, यह राष्ट्र-निर्माण और क्षेत्रीय अस्मिता के संबंध को स्पष्ट करता है।
- तीसरा, गोवा भारतीय संघवाद और बहुलतावादी लोकतंत्र का उपयोगी उदाहरण प्रस्तुत करता है।
- चौथा, पर्यटन, भूमि और पर्यावरण के प्रश्नों के माध्यम से विकास की राजनीति को समझा जा सकता है।

- पाँचवाँ, प्रवासन के माध्यम से राज्य, नागरिकता और वैश्विक सामाजिक नेटवर्क के संबंधों का अध्ययन किया जा सकता है।

इस प्रकार गोवा का अध्ययन राजनीतिक विज्ञान को इतिहास, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, पर्यावरण अध्ययन और सांस्कृतिक अध्ययन से जोड़ता है।

सैद्धांतिक आधार

- **उत्तर-औपनिवेशिक सिद्धांत-** उत्तर-औपनिवेशिक सिद्धांत यह समझने में सहायता करता है कि औपनिवेशिक शासन समाप्त होने के बाद भी सत्ता, संस्कृति, भाषा और संस्थाओं पर उसके प्रभाव किस प्रकार बने रह सकते हैं। गोवा की सांस्कृतिक संरचना को समझने में यह दृष्टिकोण उपयोगी है।
- **राष्ट्रवाद का सिद्धांत-** राष्ट्रवाद के माध्यम से गोवा मुक्ति आंदोलन और भारतीय संघ में एकीकरण की प्रक्रिया को समझा जा सकता है। गोवा की क्षेत्रीय अस्मिता और भारतीय राष्ट्रीय पहचान के बीच संबंध इस दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।
- **बहुलवाद-** बहुलवादी दृष्टिकोण यह मानता है कि समाज में अनेक समूहों और पहचानों का सह-अस्तित्व लोकतांत्रिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार है। गोवा का धार्मिक, भाषायी और सांस्कृतिक विविधतापूर्ण समाज इस दृष्टिकोण के अध्ययन के लिए उपयुक्त है।
- **विकास की राजनीतिक अर्थव्यवस्था-** इस दृष्टिकोण के माध्यम से यह समझा जा सकता है कि पर्यटन, भूमि, निवेश और प्राकृतिक संसाधनों से प्राप्त आर्थिक लाभ किस प्रकार विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच वितरित होते हैं।

अध्ययन की पृष्ठभूमि

गोवा का ऐतिहासिक विकास भारतीय पश्चिमी तट की समुद्री गतिविधियों से गहराई से जुड़ा रहा है। प्राचीन और मध्यकालीन समय में यह क्षेत्र विभिन्न स्थानीय राजवंशों तथा क्षेत्रीय शक्तियों के प्रभाव में रहा। समुद्री व्यापार के कारण गोवा का संपर्क अरब, अफ्रीकी, यूरोपीय और एशियाई व्यापारिक नेटवर्क से रहा। 1498 में वास्को-दा-गामा के भारत आगमन के बाद यूरोपीय समुद्री शक्तियों की भारत में उपस्थिति बढ़ी। पुर्तगालियों ने पश्चिमी तट पर अपना प्रभाव स्थापित किया और 1510 में गोवा पर नियंत्रण स्थापित किया। इसके बाद गोवा पुर्तगाली साम्राज्य का प्रमुख केंद्र बन गया। धीरे-धीरे यह एशिया में पुर्तगाली राजनीतिक, धार्मिक और व्यापारिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण केंद्र बना। पुर्तगाली शासन ने गोवा के सामाजिक जीवन में व्यापक परिवर्तन किए। ईसाई मिशनरी गतिविधियाँ बढ़ीं, शिक्षा एवं धार्मिक संस्थाओं का विकास हुआ और प्रशासनिक व्यवस्था में परिवर्तन आया। साथ ही धार्मिक नीतियों के कारण सामाजिक तनाव भी उत्पन्न हुए। गोवा की सांस्कृतिक संरचना पर पुर्तगाली प्रभाव वास्तुकला, भाषा, खान-पान, संगीत और सामाजिक व्यवहार के अनेक क्षेत्रों में दिखाई देता है। हालाँकि औपनिवेशिक विरासत को केवल सकारात्मक या नकारात्मक दृष्टि से देखना उचित नहीं होगा। औपनिवेशिक शासन एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था थी जिसमें सत्ता का नियंत्रण विदेशी शक्ति के हाथों में था। इसलिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान के साथ-साथ सत्ता, असमानता और नियंत्रण की प्रक्रियाएँ भी मौजूद थीं।

गोवा का ऐतिहासिक विश्लेषण

गोवा पर पुर्तगालियों के आगमन से पहले अनेक राजवंशों और क्षेत्रीय शक्तियों का शासन रहा। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में गोवा पर मौर्य साम्राज्य का प्रभाव माना जाता है। इसके बाद सातवाहन वंश (लगभग पहली–तीसरी शताब्दी ईस्वी) तथा बाद में चालुक्य वंश (छठी–आठवीं शताब्दी) का प्रभाव रहा। आठवीं–दसवीं शताब्दी के दौरान विभिन्न स्थानीय शक्तियों का प्रभुत्व रहा और दसवीं से चौदहवीं शताब्दी के बीच कदंब वंश ने गोवा के राजनीतिक, आर्थिक

और सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके बाद चौदहवीं शताब्दी में गोवा पर विजयनगर साम्राज्य का प्रभाव स्थापित हुआ। पंद्रहवीं शताब्दी में गोवा बहमनी सल्तनत के अधीन आया और बहमनी सत्ता के विघटन के बाद पंद्रहवीं शताब्दी के अंत से सोलहवीं शताब्दी के प्रारंभ तक यह बीजापुर के आदिलशाही शासकों के नियंत्रण में रहा। अंततः 1510 ई. (16वीं शताब्दी) में पुर्तगालियों ने आदिलशाही सत्ता को पराजित कर गोवा पर अधिकार स्थापित किया। इस प्रकार पुर्तगालियों से पहले गोवा का राजनीतिक इतिहास मौर्य, सातवाहन, चालुक्य, कदंब, विजयनगर, बहमनी और आदिलशाही जैसी विभिन्न शक्तियों के क्रमिक प्रभाव से निर्मित हुआ था।

गोवा का इतिहास भारत के इतिहास में विशेष स्थान रखता है, क्योंकि यह लगभग 451 वर्षों तक पुर्तगाली शासन के अधीन रहा और स्वतंत्र भारत का हिस्सा बनने वाला अंतिम प्रमुख यूरोपीय औपनिवेशिक क्षेत्र था। गोवा का इतिहास केवल औपनिवेशिक शासन की कहानी नहीं है, बल्कि इसमें प्राचीन भारतीय राज्य-व्यवस्था, समुद्री व्यापार, पुर्तगाली साम्राज्यवाद, धर्म, संस्कृति, राष्ट्रवाद और भारतीय एकीकरण सभी के तत्व दिखाई देते हैं। पुर्तगालियों के आने से पहले गोवा पर विभिन्न भारतीय राजवंशों का शासन रहा। प्राचीन काल में यहाँ कदंब वंश का महत्वपूर्ण प्रभाव था। बाद में गोवा विजयनगर साम्राज्य और बीजापुर के आदिलशाही शासकों के प्रभाव में भी रहा। गोवा की भौगोलिक स्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण थी। अरब सागर के किनारे स्थित होने के कारण यह पश्चिमी तट के समुद्री व्यापार का महत्वपूर्ण केंद्र था। अरब देशों, पूर्वी अफ्रीका और भारत के पश्चिमी तट के बीच होने वाले व्यापार में गोवा की भूमिका थी। 1498 में वास्को-दा-गामा के कालीकट पहुँचने के बाद पुर्तगालियों की भारत में उपस्थिति तेजी से बढ़ी। 1510 में पुर्तगाली सेनापति अफोंसो द अल्बुकर्क (Afonso de Albuquerque) ने बीजापुर के आदिलशाही शासन से गोवा पर कब्जा कर लिया। यही घटना गोवा के औपनिवेशिक इतिहास का निर्णायक मोड़ थी। गोवा आगे चलकर पुर्तगाली साम्राज्य का भारत में मुख्य प्रशासनिक और राजनीतिक केंद्र बन गया।

पुर्तगालियों ने गोवा को केवल व्यापारिक केंद्र के रूप में नहीं देखा। उन्होंने इसे अपने Estado da Índia (Estado da India) का महत्वपूर्ण केंद्र बनाया। गोवा से पुर्तगाली हिंद महासागर के व्यापार पर अपना प्रभाव बढ़ाना चाहते थे। मसाले, घोड़े, कपड़ा और अन्य वस्तुओं का व्यापार महत्वपूर्ण था। लेकिन पुर्तगाली शासन का एक दूसरा महत्वपूर्ण पहलू धार्मिक नीति थी। ईसाई मिशनरियों की गतिविधियाँ बढ़ीं और कई क्षेत्रों में धार्मिक परिवर्तन को प्रोत्साहित किया गया। गोवा इंक्विजिशन, जिसकी स्थापना 1560 में हुई, पुर्तगाली धार्मिक शासन के इतिहास का अत्यंत विवादास्पद अध्याय है। पुर्तगाली शासन के कारण गोवा की संस्कृति में भारतीय और यूरोपीय तत्वों का मिश्रण विकसित हुआ। इसके परिणामस्वरूप गोवा में:

- पुर्तगाली भाषा और प्रशासनिक परंपराओं का प्रभाव पड़ा।
- ईसाई धर्म का व्यापक प्रसार हुआ।
- यूरोपीय वास्तुकला विकसित हुई।
- चर्च और धार्मिक संस्थाएँ स्थापित हुईं।
- भोजन, संगीत, वेशभूषा और सामाजिक जीवन में भारतीय-पुर्तगाली मिश्रण दिखाई देने लगा।

इसी कारण आज का गोवा भारत के अन्य राज्यों की तुलना में अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान के लिए जाना जाता है। यह प्रश्न विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि जब अंग्रेजों ने भारत के अधिकांश हिस्से पर नियंत्रण स्थापित कर लिया, तब गोवा उनके अधीन क्यों नहीं आया। इसका प्रमुख कारण था कि गोवा पहले से पुर्तगाली साम्राज्य का स्थापित क्षेत्र था। ब्रिटेन और पुर्तगाल के बीच पुराने कूटनीतिक संबंध थे। इसलिए अंग्रेजों ने गोवा को उसी तरह जीतकर अपने औपनिवेशिक भारत में शामिल नहीं किया, जैसे उन्होंने अनेक भारतीय राज्यों पर प्रभुत्व स्थापित किया। इस प्रकार ब्रिटिश भारत के बीच एक छोटा-सा पुर्तगाली औपनिवेशिक क्षेत्र बना रहा।

15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ, लेकिन गोवा स्वतंत्र भारत का हिस्सा नहीं बना। पुर्तगाल ने गोवा पर अपना अधिकार छोड़ने से इनकार कर दिया और उसे अपना अभिन्न क्षेत्र माना। स्वतंत्र भारत में गोवा के भारत में विलय की मांग धीरे-धीरे मजबूत हुई। गोवा के भीतर भी मुक्ति आंदोलन विकसित हुआ। गोवा की मुक्ति के लिए राजनीतिक कार्यकर्ताओं और सामाजिक संगठनों ने आंदोलन चलाया। डॉ. राम मनोहर लोहिया ने भी 1946 में गोवा के नागरिक स्वतंत्रता आंदोलन को महत्वपूर्ण प्रेरणा दी। 1950 के दशक में गोवा मुक्ति आंदोलन और तेज हुआ। भारत सरकार ने लंबे समय तक पुर्तगाल के साथ कूटनीतिक और शांतिपूर्ण समाधान की कोशिश की। जब कूटनीतिक प्रयास सफल नहीं हुए, तब दिसंबर 1961 में भारत ने सैन्य कार्रवाई की, जिसे ऑपरेशन विजय कहा गया। 19 दिसंबर 1961 को पुर्तगाली शासन समाप्त हुआ और गोवा, दमन तथा दीव भारत के प्रशासन के अधीन आ गए। इस प्रकार गोवा में लगभग 451 वर्षों का पुर्तगाली औपनिवेशिक शासन समाप्त हुआ। 1961 से 1987 तक गोवा केंद्रशासित क्षेत्र का हिस्सा रहा। 30 मई 1987 को गोवा को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला और यह भारत का 25वाँ राज्य बना। दमन और दीव अलग केंद्रशासित प्रदेश बने रहे; बाद में 2020 में दादरा और नगर हवेली तथा दमन और दीव को मिलाकर एक केंद्रशासित प्रदेश बनाया गया। गोवा का इतिहास हमें तीन महत्वपूर्ण बातें समझाता है:

- पहला, भारत में यूरोपीय उपनिवेशवाद एक समान प्रक्रिया नहीं था। अंग्रेज, पुर्तगाली, फ्रांसीसी और डच अलग-अलग क्षेत्रों और अलग-अलग रणनीतियों के साथ भारत में सक्रिय थे।
- दूसरा, गोवा यह दिखाता है कि औपनिवेशिक शासन स्वतंत्र भारत की स्थापना के साथ स्वतः समाप्त नहीं हुआ। 1947 के बाद भी कुछ यूरोपीय औपनिवेशिक क्षेत्र भारत में बने रहे।
- तीसरा, गोवा भारतीय राष्ट्र-निर्माण और क्षेत्रीय एकीकरण का महत्वपूर्ण उदाहरण है। 1961 में इसका भारत में सम्मिलन स्वतंत्र भारत द्वारा औपनिवेशिक अवशेषों को समाप्त करने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण चरण था।

इस प्रकार गोवा का इतिहास प्राचीन भारतीय समुद्री व्यापार से शुरू होकर पुर्तगाली औपनिवेशिक शासन, धार्मिक-सांस्कृतिक परिवर्तन, गोवा मुक्ति आंदोलन और 1961 में भारतीय संघ में एकीकरण तक की लंबी ऐतिहासिक यात्रा है। गोवा भारत में यूरोपीय उपनिवेशवाद के सबसे लंबे समय तक जीवित रहने वाले उदाहरणों में से एक था। इसलिए गोवा का अध्ययन केवल स्थानीय इतिहास के रूप में नहीं, बल्कि भारतीय उपनिवेशवाद, समुद्री राजनीति, सांस्कृतिक संपर्क और राष्ट्र-निर्माण के व्यापक संदर्भ में किया जाना चाहिए।

पुर्तगाली औपनिवेशिक शासन और गोवा का सामाजिक रूपांतरण

गोवा में पुर्तगाली शासन लगभग 451 वर्षों तक रहा। इतनी लंबी औपनिवेशिक उपस्थिति ने समाज पर गहरा प्रभाव डाला। पुर्तगाली प्रशासन ने अपनी राजनीतिक और धार्मिक संस्थाओं को स्थापित किया। ईसाई धर्म का प्रसार हुआ और चर्च सामाजिक जीवन की महत्वपूर्ण संस्था बन गया। धर्मांतरण की प्रक्रिया ने गोवा की सामाजिक संरचना को प्रभावित किया। अनेक स्थानीय समुदाय ईसाई धर्म में परिवर्तित हुए, लेकिन उनके कई स्थानीय सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवहार नए धार्मिक ढाँचे के साथ भी बने रहे। इस प्रकार गोवा में स्थानीय और यूरोपीय संस्कृति का एक विशिष्ट मिश्रण विकसित हुआ। गोवा की वास्तुकला में इसका स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। पुराने गोवा के चर्च और धार्मिक परिसर औपनिवेशिक स्थापत्य की महत्वपूर्ण धरोहर हैं। दूसरी ओर, पारंपरिक गोवानी घरों में भी पुर्तगाली वास्तुशैली की झलक दिखाई देती है। भाषा के क्षेत्र में भी पुर्तगाली प्रभाव रहा। प्रशासन और शिक्षा में पुर्तगाली भाषा का उपयोग किया गया। बाद में कोंकणी और मराठी जैसी स्थानीय भाषाओं का सामाजिक महत्व बना रहा। आज कोंकणी गोवा की प्रमुख भाषायी पहचान का आधार है, जबकि पुर्तगाली भाषा का प्रत्यक्ष प्रभाव सीमित होने के बावजूद सांस्कृतिक विरासत के रूप में दिखाई देता है।

गोवा पर पुर्तगालियों के आगमन से पहले अनेक राजवंशों और क्षेत्रीय शक्तियों का शासन रहा। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में गोवा पर मौर्य साम्राज्य का प्रभाव माना जाता है। इसके बाद सातवाहन वंश (लगभग पहली–तीसरी शताब्दी ईस्वी) तथा बाद में चालुक्य वंश (छठी–आठवीं शताब्दी) का प्रभाव रहा। आठवीं–दसवीं शताब्दी के दौरान विभिन्न स्थानीय शक्तियों का प्रभुत्व रहा और दसवीं से चौदहवीं शताब्दी के बीच कदंब वंश ने गोवा के राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके बाद चौदहवीं शताब्दी में गोवा पर विजयनगर साम्राज्य का प्रभाव स्थापित हुआ। पंद्रहवीं शताब्दी में गोवा बहमनी सल्तनत के अधीन आया और बहमनी सत्ता के विघटन के बाद पंद्रहवीं शताब्दी के अंत से सोलहवीं शताब्दी के प्रारंभ तक यह बीजापुर के आदिलशाही शासकों के नियंत्रण में रहा। अंततः 1510 ई. (16वीं शताब्दी) में पुर्तगालियों ने आदिलशाही सत्ता को पराजित कर गोवा पर अधिकार स्थापित किया। इस प्रकार पुर्तगालियों से पहले गोवा का राजनीतिक इतिहास मौर्य, सातवाहन, चालुक्य, कदंब, विजयनगर, बहमनी और आदिलशाही जैसी विभिन्न शक्तियों के क्रमिक प्रभाव से निर्मित हुआ था।

औपनिवेशिकता और सांस्कृतिक विरासत

औपनिवेशिकता केवल राजनीतिक नियंत्रण का नाम नहीं है। यह समाज के ज्ञान, संस्कृति, भाषा, शिक्षा और सामाजिक संस्थाओं को भी प्रभावित करती है। इसलिए गोवा की औपनिवेशिक विरासत का अध्ययन राजनीतिक सिद्धांत के संदर्भ में भी किया जा सकता है। उत्तर-औपनिवेशिक चिंतन यह प्रश्न उठाता है कि औपनिवेशिक शासन समाप्त होने के बाद भी उसकी संस्थाएँ और सांस्कृतिक प्रभाव किस प्रकार समाज में बने रहते हैं। गोवा इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। आज भी गोवा की वास्तुकला, भोजन, संगीत, धार्मिक संस्थाएँ और कुछ पारिवारिक परंपराएँ उसके औपनिवेशिक अतीत की याद दिलाती हैं। किंतु इन्हें केवल पुर्तगाली संस्कृति का अवशेष कहना भी उचित नहीं है। समय के साथ स्थानीय समाज ने इन प्रभावों को अपने तरीके से अपनाया और उनका पुनर्निर्माण किया। इसलिए गोवा की संस्कृति को 'औपनिवेशिक संस्कृति' कहने के बजाय 'स्थानीय और वैश्विक सांस्कृतिक अंतःक्रिया से निर्मित संस्कृति' के रूप में देखना अधिक उचित है।

गोवा ने अपनी ऐतिहासिक विरासत को आधुनिक विकास के साथ संतुलित करते हुए काफी हद तक सुरक्षित रखा है। लगभग 451 वर्षों के पुर्तगाली शासन के कारण यहाँ विकसित हुई चर्चों, मठों, किलों, पुराने भवनों, पारंपरिक गोवानी घरों, सड़कों और स्थापत्य कला को आज भी संरक्षित किया गया है। पुराना गोवा इसकी ऐतिहासिक विरासत का सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण है, जहाँ बोम जीसस बेसिलिका, से कैथेड्रल और सेंट फ्रांसिस ऑफ असीसी चर्च जैसे ऐतिहासिक स्मारक मौजूद हैं। इनमें से कई इमारतें पुर्तगाली स्थापत्य और गोवा की स्थानीय निर्माण परंपरा के समन्वय को प्रदर्शित करती हैं। पुराने गोवा के चर्च और कॉन्वेंट परिसर को 1986 में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया, जिससे इनके अंतरराष्ट्रीय संरक्षण को भी मजबूती मिली। इसके अतिरिक्त गोवा के किलों, मंदिरों, मस्जिदों, पारंपरिक घरों और ग्रामीण बस्तियों को भी स्थानीय स्तर पर संरक्षित किया जाता रहा है। गोवा की विरासत केवल भवनों तक सीमित नहीं है; कोंकणी भाषा, लोकगीत, लोकनृत्य, पारंपरिक भोजन, त्योहार, धार्मिक परंपराएँ, हस्तशिल्प और स्थानीय जीवन-शैली भी इसकी अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा हैं। सरकार के पुरातत्व एवं अभिलेख विभाग तथा स्थानीय संस्थाओं द्वारा ऐतिहासिक स्मारकों के संरक्षण, दस्तावेजीकरण और पुनरुद्धार के प्रयास किए जाते हैं। इस प्रकार गोवा ने अपनी विरासत को केवल अतीत की स्मृति के रूप में सुरक्षित नहीं रखा, बल्कि उसे पर्यटन, शिक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और स्थानीय सामुदायिक जीवन से जोड़कर वर्तमान में भी जीवंत बनाए रखा है। यही कारण है कि आज का गोवा अपनी आधुनिक पहचान के साथ-साथ अपने प्राचीन, मध्यकालीन और पुर्तगाली अतीत की स्पष्ट छाप को भी सुरक्षित रखे हुए है।

गोवा मुक्ति आंदोलन और भारतीय राष्ट्र-राज्य में एकीकरण

भारत की स्वतंत्रता 1947 में हुई, लेकिन गोवा तत्काल भारतीय संघ का हिस्सा नहीं बना। पुर्तगाल ने गोवा पर अपना नियंत्रण बनाए रखा। इसके कारण गोवा की मुक्ति भारतीय राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण प्रश्न बनी रही। गोवा मुक्ति आंदोलन में स्थानीय नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और राष्ट्रवादी शक्तियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सत्याग्रह और राजनीतिक आंदोलनों के माध्यम से पुर्तगाली शासन के विरुद्ध जनमत तैयार किया गया। दिसंबर 1961 में भारतीय सैन्य कार्रवाई के बाद पुर्तगाली शासन समाप्त हुआ और गोवा भारत का हिस्सा बना। इस घटना ने गोवा के राजनीतिक इतिहास में एक नए युग की शुरुआत की। भारतीय संघ में शामिल होने के बाद गोवा के सामने अपनी विशिष्ट क्षेत्रीय पहचान और भारतीय राष्ट्रीय पहचान के बीच संतुलन स्थापित करने की चुनौती थी। गोवा के अनुभव से यह स्पष्ट होता है कि राष्ट्र-निर्माण केवल राजनीतिक सीमा के विस्तार की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि विविध क्षेत्रीय पहचानों को लोकतांत्रिक ढाँचे में समायोजित करने की प्रक्रिया भी है।

गोवा की क्षेत्रीय अस्मिता और भारतीय राष्ट्रवाद

गोवा की क्षेत्रीय अस्मिता भारतीय राष्ट्रवाद के विरोध में नहीं बल्कि उसके भीतर विकसित हुई। गोवा के लोगों ने अपनी भाषा, संस्कृति और ऐतिहासिक अनुभव को बनाए रखते हुए भारतीय लोकतंत्र में अपनी राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित की। कोंकणी भाषा का प्रश्न इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं होती; वह राजनीतिक पहचान और सांस्कृतिक अधिकार का भी माध्यम बनती है। गोवा में कोंकणी की पहचान को लेकर लंबे समय तक सामाजिक एवं राजनीतिक बहस चली। वर्ष 1987 में गोवा को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ और कोंकणी को राजभाषा का दर्जा मिला। बाद में 1992 में कोंकणी को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया। यह प्रक्रिया गोवा की क्षेत्रीय अस्मिता की राजनीतिक मान्यता का महत्वपूर्ण उदाहरण है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय संघीय व्यवस्था विविध क्षेत्रीय पहचानों को समाहित करने की क्षमता रखती है। गोवा का अनुभव भारतीय संघवाद में सांस्कृतिक बहुलता की भूमिका को समझने में उपयोगी है।

समकालीन गोवा में पुर्तगाली विरासत की निरंतरता

आज गोवा एक आधुनिक, पर्यटन-प्रधान और वैश्विक रूप से जुड़ा हुआ क्षेत्र है। इसके बावजूद पुर्तगाली विरासत पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। पुराने गोवा की चर्च वास्तुकला, पारंपरिक घर, कुछ पारिवारिक नाम, खान-पान, संगीत और सांस्कृतिक समारोह इस विरासत की निरंतरता को दर्शाते हैं। गोवा की सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि स्थानीय समाज ने विदेशी प्रभावों को अपने सामाजिक संदर्भ के अनुसार ढाला। उदाहरण के लिए भोजन में स्थानीय मसालों और यूरोपीय पाक-परंपराओं का मिश्रण दिखाई देता है। इसी प्रकार संगीत और उत्सवों में स्थानीय और यूरोपीय परंपराओं का मेल दिखाई देता है। इस प्रकार सांस्कृतिक विरासत को स्थिर वस्तु के रूप में नहीं बल्कि निरंतर परिवर्तनशील सामाजिक प्रक्रिया के रूप में समझना चाहिए।

पर्यटन और गोवा की बदलती अर्थव्यवस्था

पर्यटन ने गोवा की अर्थव्यवस्था को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। समुद्र तटों, ऐतिहासिक स्थलों, धार्मिक केंद्रों, प्राकृतिक सौंदर्य और सांस्कृतिक उत्सवों के कारण गोवा भारत के प्रमुख पर्यटन क्षेत्रों में शामिल है। पर्यटन ने रोजगार के नए अवसर उत्पन्न किए। होटल, रेस्तराँ, परिवहन, मनोरंजन, हस्तशिल्प और छोटे व्यवसायों का विस्तार हुआ। स्थानीय अर्थव्यवस्था को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार से जोड़ने में पर्यटन की महत्वपूर्ण भूमिका रही। लेकिन पर्यटन का दूसरा पक्ष भी है। बड़े पैमाने पर पर्यटन के कारण भूमि की कीमतों में वृद्धि, प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव, कचरा प्रबंधन की समस्या और तटीय क्षेत्रों में निर्माण जैसी समस्याएँ सामने आई हैं। इसलिए गोवा के विकास मॉडल का मूल्यांकन केवल पर्यटन से होने वाली आय के आधार पर नहीं किया जा सकता। विकास की गुणवत्ता का निर्धारण

इस बात से होना चाहिए कि आर्थिक लाभ स्थानीय समुदायों तक किस सीमा तक पहुँचते हैं और पर्यावरण तथा संस्कृति पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है।

पर्यटन और सांस्कृतिक व्यावसायीकरण

पर्यटन किसी क्षेत्र की संस्कृति को वैश्विक स्तर पर पहचान दिला सकता है, लेकिन इसके साथ सांस्कृतिक व्यावसायीकरण का खतरा भी होता है। जब स्थानीय संस्कृति को मुख्यतः पर्यटकों की मांग के अनुरूप प्रस्तुत किया जाता है, तब संस्कृति के मूल सामाजिक अर्थ में परिवर्तन आ सकता है। गोवा के त्योहार, संगीत, भोजन, पारंपरिक घर और समुद्र तटीय जीवनशैली पर्यटन उद्योग के महत्वपूर्ण आकर्षण बन गए हैं। इससे स्थानीय संस्कृति को आर्थिक मूल्य प्राप्त हुआ है। लेकिन यदि सांस्कृतिक परंपराएँ केवल पर्यटन उत्पाद बन जाएँ, तो उनकी सामाजिक प्रामाणिकता प्रभावित हो सकती है। अतः सांस्कृतिक पर्यटन की नीति में स्थानीय समुदायों की भागीदारी आवश्यक है।

प्रवासन और गोवा का समाज

गोवा के सामाजिक इतिहास में प्रवासन की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। रोजगार और बेहतर आर्थिक अवसरों की तलाश में अनेक गोवावासी भारत के अन्य हिस्सों और विदेशों में गए। विशेष रूप से खाड़ी देशों, ब्रिटेन, पुर्तगाल और अन्य देशों के साथ गोवा के प्रवासी संबंध विकसित हुए। प्रवासन ने गोवानी परिवारों की आर्थिक स्थिति को प्रभावित किया और विदेशों से आने वाली धनराशि ने स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान दिया। लेकिन प्रवासन का प्रभाव केवल आर्थिक नहीं है। विदेश जाने वाले लोग अपने साथ भाषा, शिक्षा, जीवनशैली और नई सामाजिक धारणाएँ लेकर लौटते हैं। इससे स्थानीय समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया तेज होती है।

विदेशों में बसे गोवावासियों और गोवा के बीच संबंध

प्रवासी गोवावासी भौगोलिक रूप से गोवा से दूर होने के बावजूद सांस्कृतिक रूप से उससे जुड़े रहते हैं। परिवार, पुश्तैनी घर, संपत्ति, धार्मिक संस्थाएँ, त्योहार और स्थानीय सामाजिक नेटवर्क इस संबंध को बनाए रखते हैं। प्रवासी समुदायों द्वारा गोवा में निवेश और सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी भी देखी जाती है। इससे गोवा की पहचान स्थानीय सीमाओं से बाहर एक वैश्विक पहचान के रूप में विकसित होती है। इस प्रकार गोवा को समझने के लिए 'स्थानीय समाज' और 'प्रवासी समाज' को अलग-अलग नहीं बल्कि एक-दूसरे से जुड़े हुए सामाजिक नेटवर्क के रूप में देखना आवश्यक है।

प्रवासन की राजनीति

प्रवासन राज्य की राजनीति को भी प्रभावित करता है। जब किसी क्षेत्र की बड़ी संख्या में आबादी विदेशों में रहती है, तब भूमि, संपत्ति, परिवार, निवेश और स्थानीय संसाधनों से जुड़े प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाते हैं। गोवा में विदेश प्रवासन की जड़ें काफी पुरानी हैं। पुर्तगाली शासन के दौरान ही गोवा के लोगों का पुर्तगाल, अफ्रीका और अन्य क्षेत्रों की ओर जाना शुरू हुआ। बाद में ब्रिटिश भारत तथा पूर्वी अफ्रीका में भी गोवावासियों ने रोजगार प्राप्त किया। शोधों में गोवा के प्रवासन को कई चरणों में देखा गया है—पड़ोसी क्षेत्रों की ओर प्रारंभिक प्रवासन, फिर ब्रिटिश भारत और अफ्रीका की ओर तथा स्वतंत्रता के बाद खाड़ी, यूरोप, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया आदि की ओर प्रवासन। गोवा में संपत्ति और भूमि का प्रश्न विशेष महत्व रखता है। विदेशों में बसे लोगों द्वारा भूमि एवं पुश्तैनी संपत्तियों को बनाए रखने से स्थानीय आवास बाजार और भूमि उपयोग पर प्रभाव पड़ सकता है। यहाँ राज्य को विकास, संपत्ति अधिकार और स्थानीय समुदाय के हितों के बीच संतुलन स्थापित करना पड़ता है। गोवा से विदेशों में होने वाला प्रवासन केवल रोजगार की तलाश की कहानी नहीं है। यह गोवा के औपनिवेशिक इतिहास, शिक्षा, समुद्री संपर्क, धार्मिक-सांस्कृतिक पहचान, रोजगार के अवसर, परिवार और प्रवासी नेटवर्क से जुड़ी एक लंबी ऐतिहासिक प्रक्रिया है। इसलिए विदेश में रहने वाला व्यक्ति भौगोलिक रूप से गोवा से दूर होने के बावजूद सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से गोवा से जुड़ा रह सकता है।

- **रोजगार और बेहतर आय-** यह सबसे महत्वपूर्ण कारणों में से एक है। विशेषकर 1960 के दशक के बाद पश्चिम एशिया और खाड़ी देशों में तेल अर्थव्यवस्था के विस्तार के साथ गोवा से बड़ी संख्या में कुशल और अर्द्ध-कुशल श्रमिक बाहर गए। बाद में यूरोप, ब्रिटेन, अमेरिका और अन्य देशों में भी प्रवासन बढ़ा।
- **गोवा में रोजगार की सीमाएँ-** गोवा की अर्थव्यवस्था पर्यटन और सेवा क्षेत्र पर काफी निर्भर है। शिक्षित युवाओं के लिए अपनी योग्यता और अपेक्षा के अनुरूप रोजगार हमेशा उपलब्ध नहीं होते। इसलिए कुछ युवा विदेशों में बेहतर career opportunities तलाशते हैं। इसी कारण आज भी गोवा के युवाओं में विदेश जाकर शिक्षा, पेशेवर रोजगार और स्थायी निवास प्राप्त करने की प्रवृत्ति देखी जाती है।
- **पुर्तगाली राष्ट्रीयता, भारतीय नागरिकता और गोवानी प्रवासी पहचान**
- 1961 से पहले पुर्तगाली शासन के अधीन रहे लोगों तथा उनके कुछ वंशजों के लिए पुर्तगाली राष्ट्रीयता के नियमों के अंतर्गत पंजीकरण अथवा राष्ट्रीयता प्राप्त करने के रास्ते उपलब्ध रहे हैं। आज भी पुर्तगाल का राष्ट्रीयता कानून वंश, जन्म, विवाह और अन्य निर्धारित आधारों पर राष्ट्रीयता प्राप्त करने की व्यवस्था करता है। गोवा के लिए यह विषय इसलिए विशेष है क्योंकि भारतीय पासपोर्ट कार्यालय, गोवा के आधिकारिक दस्तावेज में भी उल्लेख है कि पुर्तगाली राष्ट्रीयता प्राप्त करने के कारण भारतीय पासपोर्ट समर्पित करने वाले आवेदनों की संख्या उल्लेखनीय है, और गोवा के पूर्व पुर्तगाली उपनिवेश होने के कारण 1961 से पहले जन्मे गोवावासियों के लिए विशेष ऐतिहासिक परिस्थिति मौजूद है। भारतीय कानून की दृष्टि से सामान्यतः नहीं। यदि कोई भारतीय नागरिक स्वेच्छा से विदेशी नागरिकता प्राप्त करता है, तो भारतीय नागरिकता समाप्त होने का प्रश्न उत्पन्न होता है। वह भारतीय पासपोर्ट नहीं रख सकता। इसलिए इसे 'दोहरी नागरिकता' कहना सही नहीं है। यही कारण है कि गोवा में किसी व्यक्ति के पास पुर्तगाली पासपोर्ट दिखाई देने का अर्थ यह नहीं है कि वह साथ-साथ भारतीय नागरिक भी है। यहाँ प्रवासी भारतीय (OCI) की व्यवस्था महत्वपूर्ण हो जाती है। विदेशी नागरिकता प्राप्त करने वाला भारतीय मूल का व्यक्ति निर्धारित पात्रता पूरी करने पर OCI कार्ड के लिए पात्र हो सकता है। OCI भारतीय नागरिकता नहीं है, बल्कि भारत में दी जाने वाली एक विशेष दीर्घकालिक सुविधा है। भारत सरकार ने OCI को विदेशी नागरिकता के साथ भारतीय मूल के लोगों के लिए एक अलग कानूनी व्यवस्था के रूप में विकसित किया है।
- 1961 में गोवा के भारत में विलय के बाद भारत की नागरिकता व्यवस्था लागू हुई, लेकिन पुर्तगाली अभिलेखों में दर्ज कुछ व्यक्तियों और उनके वंशजों के लिए पुर्तगाली राष्ट्रीयता से संबंधित प्रक्रियाएँ बनी रहीं। पुर्तगाली कानून में पुर्तगाली माता-पिता या दादा-दादी से वंश, जन्म तथा अन्य निर्धारित कानूनी आधारों पर राष्ट्रीयता प्राप्त करने के प्रावधान हैं। पुर्तगाल की आधिकारिक न्यायिक व्यवस्था भी विदेशी जन्मे व्यक्तियों के लिए पुर्तगाली माता-पिता अथवा दादा-दादी के आधार पर राष्ट्रीयता के मार्ग को मान्यता देती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रत्येक गोवावासी को स्वतः पुर्तगाली नागरिकता मिल जाती है। किसी व्यक्ति की पात्रता उसके पारिवारिक वंश, जन्म एवं पुर्तगाली नागरिक अभिलेखों तथा लागू पुर्तगाली कानून पर निर्भर करती है। इसलिए "गोवावासी होने के कारण पुर्तगाली नागरिकता" कहना कानूनी रूप से सही नहीं होगा। भारत सामान्य रूप से दोहरी नागरिकता को मान्यता नहीं देता। यदि कोई भारतीय नागरिक स्वेच्छा से किसी विदेशी देश की नागरिकता प्राप्त करता है, तो भारतीय नागरिकता के संबंध में भारतीय नागरिकता अधिनियम, 1955 के प्रावधान लागू होते हैं। भारत का नागरिकता कानून नागरिकता के त्याग और समाप्ति के लिए अलग प्रावधान रखता है। इसलिए यदि कोई गोवावासी पुर्तगाली नागरिकता प्राप्त करता है, तो उसे एक साथ भारतीय नागरिक और पुर्तगाली नागरिक मानना सही नहीं होगा। यहीं प्रवासी भारतीय (OCI) की व्यवस्था महत्वपूर्ण हो जाती है। भारत सरकार स्पष्ट रूप से कहती है कि OCI को दोहरी नागरिकता नहीं समझा जाना चाहिए। OCI कार्डधारक विदेशी नागरिक होता है और विदेशी

पासपोर्ट रखता है; OCI भारतीय नागरिकता प्रदान नहीं करता। भारतीय मूल के कुछ विदेशी नागरिक, निर्धारित शर्तों के अधीन, OCI के लिए पात्र हो सकते हैं। कानून में ऐसे व्यक्तियों की श्रेणियाँ शामिल हैं जो कभी भारतीय नागरिक रहे हों, भारतीय नागरिक बनने के पात्र रहे हों, भारत में शामिल हुए किसी क्षेत्र से संबंधित हों, अथवा ऐसे व्यक्ति की संतान/पोता-पोती हों।

- गोवा की औपनिवेशिक विरासत केवल स्थापत्य, भाषा, खान-पान और धार्मिक संस्कृति तक सीमित नहीं है, बल्कि नागरिकता और प्रवासी पहचान की समकालीन राजनीति में भी इसकी निरंतरता दिखाई देती है। पुर्तगाली शासन की ऐतिहासिक विरासत के कारण कुछ गोवावासियों और उनके वंशजों के लिए पुर्तगाली राष्ट्रीयता प्राप्त करने के कानूनी मार्ग उपलब्ध रहे हैं। दूसरी ओर, भारतीय कानून दोहरी नागरिकता को मान्यता नहीं देता। विदेशी नागरिकता प्राप्त करने वाले भारतीय मूल के व्यक्ति, पात्रता की शर्तें पूरी करने पर, OCI व्यवस्था के माध्यम से भारत के साथ अपना सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध बनाए रख सकते हैं। इस प्रकार गोवा में औपनिवेशिक इतिहास, आधुनिक नागरिकता और वैश्विक प्रवासन के बीच एक विशिष्ट संबंध दिखाई देता है।

वैश्वीकरण और गोवा की सामाजिक संरचना

वैश्वीकरण ने गोवा को राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था से भी जोड़ दिया है। पर्यटन, प्रवासन, डिजिटल संचार, विदेशी निवेश और सांस्कृतिक आदान-प्रदान ने सामाजिक संबंधों को बदल दिया है। गोवा के युवाओं के सामने अब स्थानीय रोजगार के साथ-साथ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय अवसर भी उपलब्ध हैं। इंटरनेट और सामाजिक मीडिया ने वैश्विक जीवनशैली को स्थानीय समाज तक पहुँचाया है। इसके कारण एक ओर अवसर बढ़े हैं, वहीं दूसरी ओर स्थानीय सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण की चुनौती भी बढ़ी है।

गोवा की राजनीति में स्थानीय समुदाय की भूमिका

लोकतंत्र केवल चुनावों तक सीमित नहीं है। स्थानीय समुदायों की निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में भागीदारी लोकतांत्रिक शासन की गुणवत्ता का महत्वपूर्ण संकेतक है। गोवा में ग्राम पंचायतों, स्थानीय संगठनों, नागरिक समूहों और सामाजिक आंदोलनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। भूमि, पर्यावरण, पर्यटन और सांस्कृतिक विरासत से जुड़े प्रश्नों पर स्थानीय नागरिकों की भागीदारी लोकतांत्रिक प्रक्रिया को मजबूत करती है। विकास परियोजनाओं में स्थानीय लोगों की सहमति और भागीदारी सुनिश्चित करना राजनीतिक वैधता को बढ़ाता है।

गोवा का विकास मॉडल और सामाजिक असमानता

पर्यटन से गोवा में आर्थिक अवसरों का विस्तार हुआ है, लेकिन आर्थिक लाभों का वितरण समान नहीं है। पर्यटन उद्योग से जुड़े श्रमिकों, छोटे व्यापारियों और स्थानीय समुदायों को अलग-अलग स्तर पर लाभ प्राप्त होता है। भूमि और संपत्ति की बढ़ती कीमतें निम्न एवं मध्यम आय वर्ग के लिए आवास की समस्या उत्पन्न कर सकती हैं। इससे विकास का प्रश्न सामाजिक न्याय से जुड़ जाता है। अतः गोवा के विकास मॉडल में केवल सकल आय और पर्यटकों की संख्या को सफलता का मानदंड नहीं बनाया जाना चाहिए। मानव विकास, रोजगार की गुणवत्ता, सामाजिक सुरक्षा और स्थानीय समुदायों की आर्थिक भागीदारी भी महत्वपूर्ण मानदंड होने चाहिए।

गोवा में पहचान की बहुलता

गोवा की पहचान एकरूपी नहीं है। प्रवासी गोवावासी विदेशों में भी Christmas, Easter, Feast celebrations और अन्य गोवानी धार्मिक-सांस्कृतिक परंपराओं को मनाते हैं। हिंदू गोवावासी भी गणेश चतुर्थी, शिगमो आदि त्योहारों तथा पारिवारिक परंपराओं से जुड़े रहते हैं। इससे स्थान बदल जाता है, लेकिन सांस्कृतिक पहचान पूरी तरह समाप्त नहीं होती। प्रवासी समुदायों में भोजन सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने का बहुत महत्वपूर्ण माध्यम होता है। गोवा के पारंपरिक व्यंजन, जैसे: Goan fish curry, Vindaloo, Xacuti, Sorpotel, Bebinca, Pão आदि विदेशों में भी बनाए और खाए

जाते हैं। इस तरह भोजन स्मृति और पहचान दोनों का माध्यम बन जाता है। विदेश में रहने वाले गोवावासी अक्सर कोंकणी भाषा, पारिवारिक बोलियों और गोवा के संगीत से जुड़े रहते हैं। विशेष रूप से Mandó और Dulpod जैसी संगीत परंपराएँ गोवानी सांस्कृतिक पहचान को विदेशों में भी जीवित रखने में भूमिका निभाती हैं। एक Goan परिवार की तीसरी पीढ़ी ब्रिटेन में पैदा हुई हो सकती है। वह अंग्रेजी बोलती है, ब्रिटिश नागरिक है और वहीं रहती है। फिर भी परिवार में: Konkani शब्दों का प्रयोग, Goan food, Christmas traditions, Goan music, Goa में रिश्तेदार, Goa में ancestral house जैसी चीजें बनी रह सकती हैं। यहाँ धार्मिक, भाषायी, क्षेत्रीय और वैश्विक पहचानें एक-दूसरे के साथ मौजूद हैं। एक व्यक्ति स्वयं को गोवावासी, भारतीय, कोंकणी भाषी, किसी धार्मिक समुदाय का सदस्य तथा वैश्विक प्रवासी समुदाय का हिस्सा एक साथ मान सकता है। आधुनिक पहचान इसी बहुलता से निर्मित होती है। राजनीतिक विज्ञान की दृष्टि से यह पहचान राजनीति के अध्ययन का महत्वपूर्ण विषय है। गोवा यह दर्शाता है कि राष्ट्रीय पहचान और क्षेत्रीय पहचान एक-दूसरे के विरोधी होना आवश्यक नहीं है।

उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिकोण से गोवा

उत्तर-औपनिवेशिक सिद्धांत औपनिवेशिक सत्ता की समाप्ति के बाद भी उसके प्रभावों का अध्ययन करता है। गोवा इस सिद्धांत को समझने के लिए महत्वपूर्ण उदाहरण है। पुर्तगाली शासन समाप्त हो गया, लेकिन उसकी सांस्कृतिक विरासत बनी रही। दूसरी ओर, भारतीय राष्ट्र-राज्य में एकीकरण के बाद गोवा की पहचान भारतीय संघीय राजनीति के साथ जुड़ी। इस प्रक्रिया को सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के रूप में समझा जा सकता है। गोवा ने न तो अपनी औपनिवेशिक विरासत को पूरी तरह स्वीकार किया और न ही उसे पूरी तरह अस्वीकार किया। उसने विभिन्न ऐतिहासिक प्रभावों को अपनी नई पहचान में समाहित किया।

गोवा और बहुलतावादी लोकतंत्र

गोवा का अनुभव भारत के बहुलतावादी लोकतंत्र की क्षमता को समझने में उपयोगी है। अलग ऐतिहासिक अनुभव के बावजूद गोवा भारतीय संवैधानिक व्यवस्था में सफलतापूर्वक समाहित हुआ। धर्म, भाषा, संस्कृति और क्षेत्रीय पहचान की विविधता को लोकतांत्रिक संस्थाओं के माध्यम से अभिव्यक्ति मिली। इससे यह स्पष्ट होता है कि लोकतंत्र केवल बहुमत का शासन नहीं बल्कि विविधताओं को राजनीतिक स्थान देने की व्यवस्था भी है।

समकालीन गोवा में युवाओं की भूमिका

गोवा के युवा वैश्वीकरण और स्थानीय पहचान के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु हैं। वे आधुनिक शिक्षा, डिजिटल तकनीक और वैश्विक रोजगार बाजार से जुड़े हैं, लेकिन साथ ही स्थानीय संस्कृति से भी संबंध बनाए रखते हैं। युवा पीढ़ी के सामने रोजगार, शिक्षा, प्रवासन और सांस्कृतिक संरक्षण के प्रश्न हैं। यदि स्थानीय अर्थव्यवस्था पर्याप्त गुणवत्तापूर्ण रोजगार उपलब्ध नहीं कराती, तो युवाओं का बाहरी क्षेत्रों और विदेशों की ओर जाना बढ़ सकता है। इसलिए गोवा की विकास नीति में युवाओं के लिए स्थानीय स्तर पर ज्ञान-आधारित, तकनीकी और रचनात्मक रोजगार के अवसर बढ़ाना आवश्यक है।

गोवा की सांस्कृतिक विरासत और भविष्य

गोवा की सांस्कृतिक विरासत केवल ऐतिहासिक भवनों तक सीमित नहीं है। लोकसंगीत, नृत्य, भोजन, भाषा, धार्मिक परंपराएँ, पारंपरिक घर, लोककथाएँ और सामाजिक संस्थाएँ भी इसकी विरासत का हिस्सा हैं। आधुनिक विकास के दबाव में इन परंपराओं में परिवर्तन स्वाभाविक है, लेकिन उनका संरक्षण भी आवश्यक है। संरक्षण का अर्थ संस्कृति को स्थिर बना देना नहीं होना चाहिए। इसके बजाय नई पीढ़ी को सांस्कृतिक विरासत से जोड़ते हुए उसके आधुनिक रूपांतरण को स्वीकार करना चाहिए।

गोवा के सामने प्रमुख समकालीन चुनौतियाँ

समकालीन गोवा की प्रमुख चुनौतियों को निम्न रूप में समझा जा सकता है—

- पर्यटन के अनियंत्रित विस्तार और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन की है।
- स्थानीय समुदायों के लिए रोजगार और आर्थिक अवसरों का विस्तार है।
- भूमि एवं आवास की बढ़ती लागत से जुड़ी है।
- युवा पीढ़ी के प्रवासन और स्थानीय मानव संसाधन के उपयोग की है।
- सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की है।
- स्थानीय और वैश्विक पहचान के बीच संतुलन की है।
- विकास के लाभों का समान वितरण सुनिश्चित करने की है।
- पर्यावरणीय शासन और स्थानीय लोकतंत्र को मजबूत करने की है।

गोवा के लिए संभावित नीति-उपाय- गोवा के भविष्य के लिए ऐसी विकास नीति आवश्यक है जो आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय को एक साथ आगे बढ़ाए।

- सबसे पहले, पर्यटन को टिकाऊ और स्थानीय समुदाय आधारित बनाया जाना चाहिए।
- दूसरे, पर्यटन से प्राप्त आर्थिक लाभों में स्थानीय समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए।
- तीसरे, तटीय एवं प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के लिए प्रभावी पर्यावरणीय नियमन आवश्यक है।
- चौथे, स्थानीय युवाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण रोजगार और कौशल विकास के अवसर बढ़ाए जाने चाहिए।
- पाँचवें, सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए स्थानीय संस्थाओं और समुदायों को निर्णय प्रक्रिया में शामिल किया जाना चाहिए।
- छठे, विदेशों में बसे गोवावासियों के साथ सांस्कृतिक एवं आर्थिक संबंधों को सकारात्मक रूप से विकसित किया जा सकता है।
- सातवें, स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को अधिक प्रभावी और सहभागी बनाया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

गोवा का इतिहास भारत के इतिहास में एक विशिष्ट अध्याय प्रस्तुत करता है। पुर्तगाली औपनिवेशिक शासन से लेकर भारतीय संघ में एकीकरण और वर्तमान वैश्वीकरण तक गोवा ने निरंतर परिवर्तन की प्रक्रिया का अनुभव किया है। इस परिवर्तन में उसकी स्थानीय पहचान समाप्त नहीं हुई, बल्कि नए ऐतिहासिक संदर्भों के साथ पुनर्निर्मित होती रही। पुर्तगाली औपनिवेशिक विरासत आज भी गोवा की वास्तुकला, भाषा, खान-पान, संगीत और सामाजिक जीवन में दिखाई देती है। किंतु इसे केवल विदेशी प्रभाव के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। गोवा के लोगों ने विभिन्न सांस्कृतिक प्रभावों को अपनी स्थानीय परंपराओं के साथ मिलाकर एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान विकसित की है। 1961 के बाद भारतीय संघ में गोवा का एकीकरण भारतीय राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण उदाहरण है। गोवा ने अपनी क्षेत्रीय अस्मिता को बनाए रखते हुए भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में अपनी जगह बनाई। इससे भारतीय संघवाद की उस विशेषता का पता चलता है जिसमें विविध क्षेत्रीय पहचानों को संवैधानिक ढाँचे के भीतर स्थान दिया जा सकता है। समकालीन गोवा में पर्यटन और वैश्वीकरण ने आर्थिक अवसरों का विस्तार किया है। लेकिन आर्थिक विकास के साथ पर्यावरणीय संकट, भूमि संबंधी प्रश्न, सांस्कृतिक व्यावसायीकरण और सामाजिक असमानता जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। इसलिए विकास को केवल आर्थिक वृद्धि की दृष्टि से नहीं बल्कि सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय स्थिरता और सांस्कृतिक संरक्षण की दृष्टि से भी देखा जाना चाहिए।

गोवा से विदेशों की ओर प्रवासन भी इसकी आधुनिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा है। विदेशों में बसे गोवावासी भले ही भौगोलिक रूप से गोवा से दूर हों, लेकिन पारिवारिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों के माध्यम से वे गोवा से जुड़े

रहते हैं। इस प्रकार गोवा की पहचान स्थानीय और वैश्विक दोनों है। अंततः कहा जा सकता है कि समकालीन गोवा औपनिवेशिक अतीत, भारतीय राष्ट्रवाद, क्षेत्रीय अस्मिता, वैश्वीकरण, प्रवासन और विकास की परस्पर क्रियाओं से निर्मित एक बहुस्तरीय राजनीतिक-सामाजिक इकाई है। गोवा की वास्तविक चुनौती अपनी ऐतिहासिक विरासत को संग्रहालय में सुरक्षित रखने की नहीं, बल्कि उसे आधुनिक विकास के साथ जीवंत बनाए रखने की है। भविष्य के गोवा के लिए ऐसी विकास नीति आवश्यक है जो पर्यटन और निवेश को बढ़ावा देने के साथ स्थानीय समुदायों के अधिकार, पर्यावरण, सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक न्याय को भी प्राथमिकता दे। यदि विकास प्रक्रिया में स्थानीय नागरिकों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाती है, तो गोवा आर्थिक रूप से समृद्ध होने के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक और पर्यावरणीय विशिष्टता को भी सुरक्षित रख सकता है। इस दृष्टि से गोवा केवल एक पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि औपनिवेशिक विरासत से उत्तर-औपनिवेशिक पहचान, क्षेत्रीय अस्मिता से राष्ट्रीय एकीकरण और स्थानीय समाज से वैश्विक प्रवासन तक की परिवर्तनशील राजनीतिक प्रक्रिया का जीवंत उदाहरण है।

गोवा की वर्तमान राजनीतिक और सामाजिक पहचान उसके औपनिवेशिक अतीत, भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था और वैश्वीकरण के संयुक्त प्रभाव से निर्मित हुई है। गोवा में पुर्तगाली विरासत आज भी दिखाई देती है, लेकिन यह विरासत स्थिर नहीं है। स्थानीय समाज ने इसे अपनी सामाजिक आवश्यकताओं और ऐतिहासिक अनुभवों के अनुसार पुनर्गठित किया है। दूसरा महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि गोवा की क्षेत्रीय पहचान भारतीय राष्ट्रवाद के विरोध में नहीं है। गोवा की क्षेत्रीय अस्मिता भारतीय संघीय व्यवस्था के भीतर अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखते हुए विकसित हुई है। तीसरा, पर्यटन गोवा के आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण आधार है, लेकिन इसके लाभ और लागत दोनों हैं। पर्यटन से रोजगार और आय बढ़ती है, परंतु पर्यावरण, भूमि और स्थानीय संस्कृति पर दबाव भी बढ़ता है। चौथा, प्रवासन ने गोवा की सामाजिक संरचना को वैश्विक बनाया है। विदेशों में रहने वाले गोवावासी अपने मूल क्षेत्र से सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से जुड़े हुए हैं। पाँचवाँ, गोवा के भविष्य के लिए विकास और संरक्षण के बीच संतुलन अत्यंत आवश्यक है। गोवा की कहानी केवल पुर्तगाली शासन से भारतीय शासन तक सत्ता परिवर्तन की कहानी नहीं है। यह इतिहास, पहचान, संस्कृति, राष्ट्रवाद, लोकतंत्र, प्रवासन और विकास के बीच निरंतर संवाद की कहानी है। यही बहुआयामी स्वरूप गोवा को राजनीतिक विज्ञान के शोध के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बनाता है। औपनिवेशिक विरासत और आधुनिक वैश्वीकरण के बीच गोवा जिस प्रकार अपनी क्षेत्रीय पहचान को पुनर्परिभाषित कर रहा है, वह भारत में विविधता और लोकतांत्रिक सह-अस्तित्व को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत करता है।

संदर्भ सूची

1. De Souza, Teotonio R. (1990). Goa Through the Ages: An Economic History, Volume II. New Delhi: Concept Publishing Company.
2. Borges, Charles J. & Helmut Feldmann (Eds.). (1997). Goa and Portugal: Their Cultural Links. New Delhi: Concept Publishing Company.
3. Borges, Charles J., Oscar Guilherme Pereira & Hannes Stubbe (Eds.). (2000). Goa and Portugal: History and Development. New Delhi: Concept Publishing Company.
4. Shirodkar, P. P. (1988). Goa's Struggle for Freedom. Goa: Government/Goa-related historical publication.
5. De Souza, Teotonio R. (1994). Goa to Me. Goa: Concept Publishing Company.
6. Frenz, Margret. (2014). Community, Memory, and Migration in a Globalizing World: The Goan Experience, c. 1890–1980. New Delhi: Oxford University Press.
7. Frenz, Margret. (2014). "Moving On—Making New Lives." In Community, Memory, and Migration in a Globalizing World: The Goan Experience, c. 1890–1980, pp. 222–257. Oxford University Press.
8. Frenz, Margret. (2014). "Introduction." In Community, Memory, and Migration in a Globalizing World: The Goan Experience, c. 1890–1980, pp. 1–46. Oxford University Press.
9. Anderson, Benedict. (1983). Imagined Communities: Reflections on the Origin and Spread of Nationalism. London: Verso.
10. Anderson, Benedict. (1991). Imagined Communities: Reflections on the Origin and Spread of Nationalism. Revised Edition. London: Verso.
11. Bhabha, Homi K. (1994). The Location of Culture. London: Routledge.
12. Fanon, Frantz. (1961). The Wretched of the Earth. New York: Grove Press.
13. Fanon, Frantz. (1963). The Wretched of the Earth. New York: Grove Press.
14. Said, Edward W. (1978). Orientalism. New York: Pantheon Books.
15. Said, Edward W. (1993). Culture and Imperialism. New York: Alfred A. Knopf.
16. Smith, Anthony D. (1991). National Identity. Reno: University of Nevada Press.
17. Smith, Anthony D. (1998). Nationalism and Modernism: A Critical Survey of Recent Theories of Nations and Nationalism. London: Routledge.
18. Sen, Amartya. (1999). Development as Freedom. Oxford: Oxford University Press.
19. Harvey, David. (2005). A Brief History of Neoliberalism. Oxford: Oxford University Press.
20. Castells, Manuel. (1996). The Rise of the Network Society. Oxford: Blackwell.
21. Castells, Manuel. (1997). The Power of Identity. Oxford: Blackwell.
22. Giddens, Anthony. (1990). The Consequences of Modernity. Stanford: Stanford University Press.
23. Appadurai, Arjun. (1996). Modernity at Large: Cultural Dimensions of Globalization. Minneapolis: University of Minnesota Press.
24. Robertson, Roland. (1992). Globalization: Social Theory and Global Culture. London: Sage.
25. Nussbaum, Martha C. (2011). Creating Capabilities: The Human Development Approach. Cambridge, MA: Harvard University Press.
26. Castles, Stephen & Mark J. Miller. (2009). The Age of Migration: International Population Movements in the Modern World. 4th Edition. New York: Guilford Press.
27. Cohen, Robin. (1997). Global Diasporas: An Introduction. London: UCL Press.
28. Vertovec, Steven. (2009). Transnationalism. London: Routledge.
29. Levitt, Peggy & Nina Glick Schiller. (2004). "Conceptualizing Simultaneity: A Transnational Social Field Perspective on Society." International Migration Review, 38(3), 1002–1039.
30. Portes, Alejandro, Luis E. Guarnizo & Patricia Landolt. (1999). "The Study of Transnationalism: Pitfalls and Promise of an Emergent Research Field." Ethnic and Racial Studies, 22(2), 217–237.
31. Chandra, Bipan. (1989). India's Struggle for Independence, 1857–1947. New Delhi: Penguin Books.
32. Chandra, Bipan. (2009). History of Modern India. New Delhi: Orient Blackswan.
33. Austin, Granville. (1966). The Indian Constitution: Cornerstone of a Nation. Oxford: Oxford University Press.
34. Austin, Granville. (1999). Working a Democratic Constitution: The Indian Experience. New Delhi: Oxford University Press.

35. Kothari, Rajni. (1970). Politics in India. New Delhi: Orient Longman.
36. Rudolph, Lloyd I. & Susanne Hoeber Rudolph. (1987). In Pursuit of Lakshmi: The Political Economy of the Indian State. Chicago: University of Chicago Press.
37. Majeed, Akhtar. (2005). "Indian Federalism: Political and Economic Dimensions." Newman, Robert S. (2001). Of Umbrellas, Goddesses and Dreams: Essays on Goan Culture and Society. Mapusa, Goa: Other India Press.
38. Axelrod, Paul & Michelle A. Fuerch. (1998). "Portuguese Orientalism and the Making of Goa." संबंधित गोवा-अध्ययन साहित्य में महत्वपूर्ण संदर्भ।
39. Kosambi, Damodar Dharmanand. (1965). The Culture and Civilisation of Ancient India in Historical Outline. London: Routledge & Kegan Paul.
40. Kosambi, Damodar Dharmanand. (1975). An Introduction to the Study of Indian History. Bombay: Popular Prakashan.
41. Government of India. (2011). Census of India 2011: Goa. Office of the Registrar General and Census Commissioner, India, Ministry of Home Affairs, Government of India.
42. Government of India. (2023). Goa: State Profile and Development-related Statistical Sources. Government of India.
43. Government of Goa. (2026). Official Goa Government Information and Historical Records. Government of Goa.
44. Said, Edward W. Orientalism. Pantheon Books, 1978.
45. Bhabha, Homi K. The Location of Culture. Routledge, 1994.
46. Fanon, Frantz. The Wretched of the Earth. Grove Press, 1961.
47. Anderson, Benedict. Imagined Communities: Reflections on the Origin and Spread of Nationalism. Verso, 1983.
48. Smith, Anthony D. National Identity. University of Nevada Press, 1991.
49. Castles, Stephen, and Mark J. Miller. The Age of Migration: International Population Movements in the Modern World. Guilford Press.
50. Harvey, David. A Brief History of Neoliberalism. Oxford University Press, 2005.
51. Sen, Amartya. Development as Freedom. Oxford University Press, 1999.
52. Nussbaum, Martha C. Creating Capabilities. Harvard University Press, 2011.
53. Government of Goa. Economic Survey of Goa. Government of Goa.
54. Government of India. Census of India. Office of the Registrar General and Census Commissioner, India.
55. Government of India. Constitution of India. Government of India.
56. Government of Goa. Goa State Development Reports. Government publications.
57. UNESCO. World Heritage and Cultural Heritage Documentation. UNESCO publications.